लर्निंग गैप को भरने के रचनात्मक प्रयास

– बिपिन जोशी

विद्यालय-	राजकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय मटीना ब्लॉक गरुड़, जिला बागेश्वर, उत्तराखण्ड
प्रधानाध्यापक-	दुर्गा लाल वर्मा
सहायक अध्यापक-	ख्याली दत्त जोशी, संतोष कुमार
नामांकन-	19
भोजनमाता-	पुष्पा फुलारा
ग्राम प्रधान-	रविन्द्र बिष्ट
एस.एम.सी. अध्यक्ष-	गीता शर्मा

यह देखना कितना सुखद है कि कोई शिक्षक स्वयं पहल लेकर शिक्षा के रचनात्मक अभियान को आगे बढ़ाता हो। वर्तमान दौर में बच्चों का सीखना प्रभावित हुआ है ऐसे में एक सवाल उभरता है क्या करें कि बच्चों का लर्निंग गैप पाटा जाय। वक्त की जरूरत है कि शैक्षणिक प्रयास फलदायी हो, और बच्चों का लर्निंग गैप कम हो। उनमें अवलोकन, विश्लेषण और प्रश्न करने की मूलभूत दक्षताओं का विकास हो। हमारे शैक्षणिक जगत के सारे प्रयास इसी ओर इशारा करते हैं। इस आलेख में जानते हैं राष्ट्रपति पुरुस्कार प्राप्त प्रधानाध्यापक दुर्गा लाल वर्मा जी के रचनात्मक प्रयासों के बारे में। दुर्गा लाल जी उत्तराखण्ड, जनपद बागेश्वर, विकास खण्ड गरुड़ के राजकीय जूनियर हाईस्कूल मटेना में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

बीते दो वर्षो में कोविड 19 महामारी ने सभी क्षेत्रों को झकझोरा है। व्यापार हो या पर्यटन व अन्य रोजगार हर जगह कोविड का बुरा प्रभाव देखने को मिला है। शिक्षा के क्षेत्र में भी कोविड महामारी व लॉकडाउन का खासा असर रहा। डेढ़ महीने की स्कूल बंदी ने प्राथमिक व अपर प्राथमिक शिक्षा में गंभीर रूप से शैक्षणिक क्षति को बढ़ावा दिया है या दूसरे शब्दों में कहें तो विद्यार्थियों के बीच लर्निंग गैप को बढ़ाया है। कुछ संस्थानों ने शोध के बाद इसे लर्निंग लॉस का नाम भी दिया है। हालात बड़े नाजुक हैं। उत्तराखण्ड सहित देश के अन्य राज्यों में प्राथमिक शिक्षा में हुए लर्निंग लॉस को देखें तो सभी कक्षाओं में बच्चों के सीखने के स्तर प्रभावित हुए हैं। शब्द पढ़ना, अपनी समझ से वाक्य निर्माण करना, धारा प्रवाह पठन, चित्रों को देखकर उसके बारे में लिखना हो या सामान्य गणित या अंग्रेजी भाषा। सभी विषयों में बच्चों को खासा दिक्कतों का सामना करना पड़ा है। ऑनलाइन पढ़ाई बहुत कारगर साबित नहीं हुई है। ऐसे में बहुत से शिक्षकों ने बच्चों के लर्निंग गैप को पाटने के लिए स्वयं के स्तर से ऑफलाइन प्रयास भी किये हैं। उनके प्रयास अभी जारी हैं। ऐसे ही शिक्षक हैं दुर्गा लाल वर्मा। आप गरुड़ के टानीखेत क्षेत्र में रहते हैं। अपर प्राथमिक विद्यालय मटेना गरुड़ में कई सालों से शिक्षण कार्य कर रहे हैं।

आपको राष्ट्रपति, शैलेश मटियानी, राज्यपाल पुरुस्कार, तरूश्री पुरुस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। शिक्षा के साथ आपने पर्यावरण संरक्षण का वृहद अभियान भी पौधा मेरे नाम का तथा चेली वाटिका नाम से संचालित किया है। दुर्गा लाल जी बताते हैं कि इस पूरे कार्य में इनकी पत्नी निरंजना वर्मा जो कि स्वयं एक शिक्षिका है ने काफी सहयोग किया है वे भी उनको प्रेरित करती हैं दोनों का शिक्षा से जुड़े रहने का लाभ भी वैचारिक रूप से एक दूसरे को मिलता है।

मोहल्ला पाठशाला की शुरुआत

विभागीय एसओपी के अनुसार बच्चों को 3 घंटे से अधिक समय तक स्कूल में नहीं रख सकते हैं। अब शैक्षणिक सत्र भी पूरा होने वाला है ऐसे में कम समय में बच्चों को पाठ्यक्रम भी पूरा कराना है और उनका लर्निंग लॉस भी पाटना है। यानी पिछले महिनों का लर्निंग गैप कैसे पूरा होगा ? यह एक चुनौती भी है इस चुनौती से निपटने के लिए बच्चों के साथ रचनात्मक तरीकों से अध्ययन कार्य करना होगा। दुर्गा लाल वर्मा जी बहुत सहजता से कहते हैं कि विविध प्रकार की वर्कशीट और गतिविधियों के जरिये स्कूल के अतिरिक्त उनके अभिभावकों की अनुमति के बाद वे बच्चों को पढ़ा रहे हैं। सीखने समझने में मदद कर रहे हैं। इस अभियान को वे मोहल्ला पाठशाला का नाम दिया गया है। यानी एक मोहल्ले के बच्चे को एक जगह एकत्र करके रोजाना दो घंटे पढ़ाना होता है। इसी तरह फिर अगले मोहल्ले में अगले दिन कक्षा लगती है जिसमें अन्य स्कूलों के बच्चे भी जुड़ सकते हैं, कक्षा का लाभ ले सकते हैं।

मोहल्ला पाठशाला में गणित, भाषा

हिंदी, अंग्रेजी, विज्ञान की कक्षाएं नियमित रूप से संचालित हो रही हैं। अवकाश वाले दिन भी उक्त कक्षाएं संचालित की जाती हैं। बच्चों का सीख स्तर आगे ले जाने के लिए शिक्षकों का बच्चों को अतिरिक्त समय देना उनकी वैयक्तिक एफर्ट और समर्पण का मुद्दा है। इस तरह के प्रयासों में अपना व्यक्तिगत समय लगाना होता है, स्कूल में समय देने के बाद तथा तमाम तरह के विभागीय दस्तावेजीकरण के कार्यों को संपादित करने के बाद मोहल्ला पाठशाला जैसी रचनात्मक गतिविधियों के लिए समय निकालना, योजना बनाना, बच्चों को रुचिपूर्ण शिक्षण से जोड़ पाना स्वयं में एक चुनौती है।

विभागीय अधिकारी

'दूरस्थ क्षेत्र के वंचित बच्चों के लिए दुर्गा लाल वर्मा जी का प्रयास सराहनीय है। बच्चों को नवाचारी गतिविधियों से शिक्षा देने का कार्य एक अच्छा उदाहरण है। कोविड काल में घर–घर जाकर शिक्षण का अभिनव प्रयोग दुर्गा लाल जी ने किया है, जो सभी के लिए प्रेरणादायी है।'

–बीईओ, उम्मेद सिंह रावत जी

'दुर्गा लाल जी एक नवाचारी शिक्षक हैं। पर्यावरण और शिक्षा में उनके नवाचारी प्रयोग सराहनीय है। पौधा मेरे आंगन का हो या चेली वाटिका आपने नवाचारों से छात्रों तथा समुदाय को जोड़ा है बच्चों में इसका असर भी दिखता है।'

– बीआरपी, भुवन भट्ट जी

'दुर्गा लाल जी के नवाचारी प्रयास सकारात्मक हैं। पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी पहल समुदाय में एक प्रकार की जागरूकता कायम करेगी। सार्वजनिक शिक्षा के प्रति लोगों में भरोसा कायम करने के लिए ऐसे प्रयासों की आज समाज को जरूरत है।'

– डायट प्राचार्य, डॉ. शैलेन्द्र धपोला जी

आज कोविड महामारी से जूझते हुए इस तरह के सृजनात्मक प्रयास बेहद जरूरी हैं। किताबों से बच्चों का रिश्ता कैसे बना रहे। सीखना उनकी दिनचर्या का हिस्सा कैसे बना रहे और पढ़ने–लिखने के अभ्यास से वे पुनः कैसे जुड़े? इस बात को समझते हुए वर्मा जी ने मजेदार गतिविधियां बनाई हैं। जिनमें खेल खेल में गणित सीखना, मजेदार पहेली कॉर्नर, मोबाइल पुस्तकालय, टीएलएम निर्माण, कठपुतली कला से कहानी शिक्षण जैसे मनोरंजक तरीके शामिल हैं। बच्चे रुचि लेते हुए सीखते हैं तथा उनकी सृजनात्मकता का विकास भी होता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि इन गतिविधियों में सभी बच्चों को समान रूप से भागीदारी के अवसर भी मिलते हैं।

दुर्गा लाल वर्मा, प्रधानाध्यापक बताते हैं कि कोविड काल से पहले वे रविवार को स्वैच्छिक रूप से मस्ती की पाठशाला नाम की गतिविधि भी संचालित करते थे। विगत दस सालों से वे मस्ती की पाठशाला संचालित कर रहे हैं। गांव के बच्चे इस गतिविधि का हिस्सा हैं। खेल–खेल में पढ़ाई कैसे हो, इस पर फोकस किया गया। कक्षा–कक्ष में जाते ही सीधे ही नहीं पढ़ाते बल्कि उनके साथ कुछ सहज माहौल बनाया जाता था। एनसीएफ

2005 को आधार बनाकर शोधपरक गतिविधि कराई जाती है। जैसे विद्यालय के आसपास बांज खूब मात्रा में है तो बच्चों को बांज से संबंधित शोध कार्य करायें। कैसे बांज पानी को सहेजने में और जमीन में नमी बनाये रखने में सहायक होता है।

बांज की पत्तियों का चारे के रूप में क्या उपयोग है और बांज कैसे किसान के लिए एक मित्र के रूप में जाना जाता है। इस तरह की जानकारियां बच्चे स्वयं करके एकत्र करते हैं। जैसे – बच्चों को वाष्पोत्सर्जन का प्रयोग बताना है तो बांज के टहनी में कुछ पत्तों को पॉलीथीन से बांध दिया कुछ समय स्वयं देखते हैं कि पॉलीथीन में भाप जमा हो गई है। उनका सवाल होता है कि ये भाप आई कहां से ? इस पर बातचीत के दौरान वे समझ जाते हैं कि पेड़ भी सांस लेते हैं, जिससे भाप एकत्र हुई। अन्य विद्यालयों के बच्चे भी प्रत्येक रविवार को दो घंटे के इस सत्र में खूब आनंद लेते थे। कोविड काल के दौरान मस्ती की पाठशाला बाधित हुई है उम्मीद है जल्दी दोबारा शुरू होगी। शिक्षक कहते हैं – बच्चा घर से विद्यालय की ओर जाता है तो आने जाने के अल्प समय में भी वह प्रकृति व आसपास के वातावरण से बहुत कुछ सीखते हुए आता है। उसके भाव विचारों व स्वतंत्र अभिव्यक्ति को विद्यालय में व कक्षा–कक्ष में सम्मानजनक स्थान देना जरूरी है ।

पढ़ाने जैसे बोझिल शब्द से बच्चों में अक्सर अरुचि देखने को मिलती है। अगर एक कुशल शिक्षक इसे अपने कौशल से यह कहकर कि आज हम कुछ सीखते–सिखाते हैं से सम्बोधित करें तो बच्चों में एक रोमांच उत्पन्न होता है। उनके लिए सीखना, अनुभव प्राप्त करना, अपने सीखे हुए को साथियों में साझा करना आनंददायक प्रक्रिया होती है। विगत डेढ़ सालों में कोविड काल के दौरान बच्चों के सीखने की प्रक्रिया बहुत प्रभावित हुई है। मई 2021 में जारी एसओपी के अनुसार विद्यालय में सोमवार से शुक्रवार तक 3 घण्टे का शिक्षण कार्य किया जा रहा है। शनिवार को विद्यालय सैनेटाइज किया जाता है तथा रविवार अवकाश होने से विद्यालयी प्रक्रियाओं के लिए समय बहुत सीमित हो जाता है। ऐसे में मोहल्ला पाठशाला शुरू करने का विचार मन में आया। साथी शिक्षकों ने प्रोत्साहन बढ़ाया और समुदाय के ग्रामीणों ने भी सहयोग किया और 5 सितंबर 2021 से मोहल्ला–मोहल्ला जाकर दो घण्टे की रचनात्मक कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है। इस शैक्षिक नवाचार का सीधा लाभ बच्चों को मिल रहा है।

गतिविधियां

- कक्षा–शिक्षण के साथ ही परिवेशीय शिक्षा को जोड़कर रुचिकर शिक्षण का माहौल बनाना।
- अभिभावक, छात्र व शिक्षक को समाज से जोड़कर शैक्षिक उन्नति में सहभागी बनाना।
- विद्यार्थियों को स्वयं करके सीखने के मौके देना, भय मुक्त शिक्षा का प्रसार करना तथा सरकारी विद्यालयों के प्रति सकारात्मक सोच का प्रसार करना।
- इसके साथ ही विद्यालय में निम्नलिखित गतिविधियों से शिक्षण कार्य किया जाता है –
- शनिवार को बोझमुक्त व गतिविधि आधारित शिक्षण, जिसमें पुरानी घड़ियों सहायता से कोणों की जानकारी देना।
- स्वरचित कविताओं के माध्यम से पपेट संचालन, विभिन्न मुद्दों पर पपेट शो से रुचिकर शिक्षण।
- मैथ्स मस्ती, गणित का जादू, मैथ्स बैंक इन गतिविधियों में बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना। सवाल जवाब की प्रक्रिया में सभी बच्चों का शामिल करना। कैलेण्डर से गणितीय संक्रियाओं की समझ, जोड़ की संक्रियाओं को ट्रिक से समझाना।
- प्रिन्ट रिच वातावरण को समृद्ध करना। दीवारों पर गणितीय जानकारी, मैथ्स मैजिक, स्वरचित कविता कॉर्नर।
- शादी कार्ड का गणितीय प्रयोग– गणित के टीएलएम बनाना।
- चेली वाटिका में विभिन्न टायरों को रंग कर उनमें पौधे लगाये गये हैं पर्यावरण संरक्षण के साथ–साथ बच्चों को वृत, त्रिज्या, परिधि, क्षेत्रफल, परिमाप की अवधारणाओं से परिचित कराया जाता है। गणित के सत्र में बच्चों को स्वयं करके सीखने की अवधारणा से भी परिचित कराया जाता है।

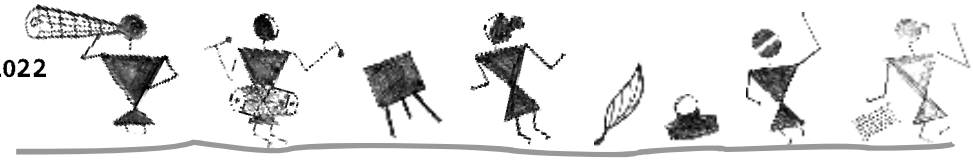

बच्चों का लर्निंग लॉस निश्चित समय में पूरा हो पायेगा। मोहल्ला पाठशाला की कक्षाएं रोचक हों, खेल–खेल में सीखने और नवाचारों से भरपूर हो इस बात का खास ध्यान रखा जाता है। मोहल्ला पाठशाला का उद्देश्य बच्चों को स्वच्छंद वातावरण में नये अनुभवों से रू–ब–रू कराना है।

कहते हैं यदि मन में कुछ अलग करने की चाह हो तो रचनात्मक विचार मूर्त रूप लेते हैं इसकी बानगी चेली वाटिका के रूप में दिखती है– बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ थीम को रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत करने की अनूठी मुहिम चेली वाटिका के रूप में यहां दिखती है। बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने की यह पहल है। टायरों को रंग कर उनमें विभिन्न प्रकार के औषधीय पौधे रोपे गये हैं। इस कार्य में सीमैप संस्था ने भी सहयोग किया। – अश्वगंधा, जिरेमिनयम, एलोवेरा, पत्थर चट्टा, तुलसी, लेमनग्रास, आंवला, आदि पौधे रोपे गये हैं। गांव वालों को वृक्षों के महत्व से रू–ब–रू कराना भी एक उद्देश्य है शिक्षक बताते हैं कि वृक्षों को रोपना एक बात है और उनकी देखभाल करना भी जरूरी है। इसके लिए उन्होंने स्वयं के प्रयासों व विद्यालयी फण्ड एवं तरूश्री पुरुस्कार में प्राप्त धन राशि से वाटिका के चारों और पांच नाली जमीन की तार बाड़ की है ताकि जंगली जानवरों से वृक्षों की सुरक्षा हो सके। प्रत्येक बच्चे के नाम का एक पौधा यहां रोपा गया है।

गांव में कोई शादी या शुभ कार्य होता है तो परिवार के लोग विद्यालय की वाटिका में एक पौधा लगाते हैं। किसी घर में कोई बेटी पैदा होती है तो उसके अभिभावकों द्वारा विद्यालय की वाटिका में बच्ची के नाम से पौधा रोपड़ किया जाता है उस दिन एक आयोजन भी विद्यालय में रखा जाता है। इस अभियान को पौधा मेरे आंगन का नाम भी दिया गया है। दुर्गा लाल जी के इन प्रयासों के लिए उनको तरु श्री पुरुस्कार, शैलेश मटियानी पुरुस्कार से भी नवाजा गया है।

जांच पड़ताल– इस गतिविधि में बच्चों को बताया जाता है प्लास्टिक के रैपर में पैक्ड खाने की चीजों के बारे में। अक्सर हम दुकान से सामान लेते वक्त रैपर में लिखी जानकारियों को नहीं पढ़ते। उत्पाद कब बना है? उसकी एक्सपाइरी डेट कब की है? गांव घरों में अक्सर पुरानी चीजों को बेच दिया जाता है, लोग इस बारे में कम जागरूक हैं। बच्चों को बताया जाता है कि किसी भी खाद्य वस्तु या दवाई को लेते वक्त देखना चाहिए उत्पाद व एक्सपाइरी डेट को पढ़ना चाहिए। इसे

समझाने के लिए रास्तों में पड़े प्लास्टिक रैपर को लेकर या किसी पुराने पैकट को पढ़कर डेमो किया जाता है। ताकि बच्चों को समझ में आये और वे खरीदने से पहले ठीक से जांच लें।

(बिपिन जोशी की दुर्गा लाल वर्मा जी से बातचीत के आधार पर)

प्रवाह हेतु आमंत्रण

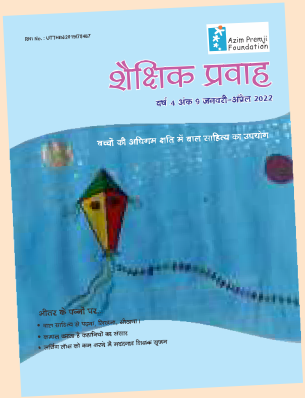

आप जानते ही हैं कि प्रवाह में शिक्षक साथियों के अनुभव एवं उनकी रचनाएं भी प्रकाशित की जाती हैं। शिक्षक साथी अपने लेख अथवा बच्चों की रचनाओं को प्रकाशन हेतु भेजना चाहें तो निम्न पतों पर प्रेषित करें।

- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, 360 (ख), आमवाला तरला, देहरादून, उत्तराखण्ड–248001**
- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, कुड़ियाल भवन, भटवाड़ी रोड, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड–249193**
  फोन/फैक्स : 01374–222505
- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, वार्ड नं.3, नियर गुरुद्वारा, दिनेशपुर, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड**
- **अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, लोअर मॉल रोड, कर्नाटक खोला, नियर डायट, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड–263601**

ई–मेलः pravah@azimpremjifoundation.org